पूर्वी चम्परण जिले में नगर केन्द्रों की समस्याएँ

विकाश कुमार, शोध छात्र
डा0 कमलेश प्रसाद, प्रोफेसर
विश्वविद्यालय भूगोल विभाग
बी. आर. ए. बी. यू. मुजफ्फपुर– 842001

पूर्वी चम्पारण जिले के नगर केन्द्रों के नगरीय अध्ययन से नगर के विभिन्न आयामों का मूल्यांकन हो जाता है। नगर में नागरिकों के रहन–सहन तथा उनको विभिन्न सुविधाओं को प्रदान करना नगर केन्द्रों के प्रशासनिक इकाई तथा सरकार का दायित्व होता है। प्रशासन इकाई आवश्यकताओं एवं सेवाओं की पूर्ति करता है, तबतक अधिक नगरीय एवं जनसंख्या विकास हो जाता है। पिछली सदी में तीव्र नगरीकरण के कारण नगरों में ऐसी समस्याओं का जन्म हुआ, जिसके सम्बन्ध में कोई सोचा भी नहीं था। आज विश्वव्यापी स्तर पर अनेक नगरीय समस्यायें किन्हीं–न– किन्हीं रूपों में नगरीय जीवन को प्रभावित करने लगी है।

यह सर्वमान्य अवधारणा है कि नगरीय जीवन उत्कृष्ट मूल्यों पर आधारित जीवन–पद्धति होती है, जबकि वर्तमान समय में विविध समस्याओं के कारण उसमें क्षरण होने लगा है। भारत के महानगरों का एक तिहाई जनसंख्या गन्दी बस्तियों में निवास करने को बाध्य है, जहाँ न्यूनतम नागरिक सुविधायें भी उपलब्ध नहीं है। लगभग इससे बदतर हालत छोटे–छोटे नगरों की है जहाँ गन्दी बस्ती एवं स्क्वैटर बसाव का विकास हो जाता है। जनसंख्या से बोझिल नगरों की समस्यायें विकराल रूप लेती जा रही है, क्योंकि संसाधनों के अभाव में विशेषकर विकासशील देशों में कई कारगर सफलता नहीं मिल पा रही है। पूर्वी चम्पारण जिले के नगर केन्द्रों में नगरीय गुणवत्ता का बहुत ही कम विकास हुआ है। मोतिहारी नगर को छोड़कर अन्य सभी नगर केन्द्र छोटे–छोटे हैं, जिनमें आधुनिक नागरिक सुविधाओं की विशेष कमी है। अभी भी इन छोटे–छोटे नगर केन्द्रों में ग्रामीण परिवेश है, जो ग्रागर केन्द्रों

(Rurban Centres) से थोड़ा–सा ऊपर है। मोतिहारी नगर सबसे बड़ा नगर केन्द्र पूर्वी चम्पारण जिला में है, जहाँ नागरिक सुविधायें कुछ सीमा तक बेहतर है, परन्तु पुराना बसाव होने के कारण आवागमन, वायुगमनागमन, रोशनी, नाले आदि की समस्या चरम सीमा पर है।

नगरीय समस्याओं को प्रधानतः दो वर्गों में बाँटा जा सकता है–

1. **आन्तरिक समस्यायें –** नगर की आन्तरिक समस्याओं में नगर की सीमा के अन्दर आवासीय गमनागमन, नागरिक सेवायें एवं सुविधायें, खुली भूमि और पर्यावरणीय समस्यायें प्रमुख हैं।

2. **बाह्य समस्यायें –** बाह्य समस्याओं में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों से अनियन्त्रित जनसंख्या प्रवाह, नगर सीमा के बाहर अनियोजित नगर विस्तार, कृषि भूमि का अपहरण तथा नगरों के सेवा क्षेत्रों के विकास के लिये नगर आधारित विकास योजना का अभाव आदि विशेष उल्लेखनीय है।

नगर केन्द्रों की आन्तरिक समस्यायें :

नगर केन्द्रों की आवासीय समस्या – नगरों में बढ़ती जनसंख्या की तुलना में आवासीय गृहों का निर्माण नहीं हो पाता है, क्योंकि नगरों में पूंजी निवेश का मुख्य उद्देश्य अधिक लाभ प्राप्त करना होता है।

पूर्वी चम्पारण जिले में मोतिहारी सबसे बड़ा नगर केन्द्र है। इसलिए सबसे बड़ा सेवा केन्द्र तथा कार्य स्थल है। विभिन्न कार्यों में जुड़े होने के कारण लोग यहाँ निवास करने लगे हैं। व्यवसाय, सरकारी एवं निजी कार्यों में कार्य करने के लिए लोग मोतिहारी में आते हैं और निवास करते हैं। शिक्षा, चिकित्सा आदि के उद्देश्य से भी मोतिहारी नगर में जनसंख्या का केन्द्रण है।

गमनागमन की समस्या – नगरीय जीवन की उत्कृष्टता, सहज और सुव्यवस्थित गमनागमन में निहित होती है, क्योंकि कार्य सम्पादन में इसकी अहम भूमिका होती है। मोतिहारी नगर में मौजूद सड़कों का रख–रखाव तथा आधारभूत सुविधाओं की कमी है। सड़क पर पॉट होल्स, खुला ड्रेनेज मैन होल ट्रैफिक का धीमी गति से चलने को बाध्य करते हैं तथा मोटर वाहन खराब हो जाते हैं। सड़क की सुविधाओं में फुटपाथ, सब–वे (Sub ways), डिवाइडर्स, बस पड़ाव (Bus Stops), साइनस (Signs), मार्किंग्स, गार्ड टेल्स और सिग्नल्स इत्यादि की अनुपस्थिति आन्तरिक सड़क पर कॉन्जेशन उत्पन्न करती है।

मोतिहारी नगर में गाड़ी पार्क करने के लिए पार्किंग की व्यवस्था किसी भी व्यवसायिक क्षेत्र में नहीं है। महत्वपूर्ण नगर व्यावसायिक क्षेत्रों में जैसे मीना बाजार, हेनरी बाजार, गाँधी चौक, सोना पट्टी और बलुआ चौक पर कहीं भी वाहन पार्किंग की जगह चिन्हित नहीं है। मोतिहारी नगर में ट्रांसपोर्ट नगर की अनुपस्थिति है। एक नया बस स्टैण्ड बना है फिर भी NH-28A के किनारे छतौनी चौक पर बस खड़ी रहती है, जिससे ट्रैफिक जाम और सड़क दुर्घटना होती है। अधिकतर जानलेवा (Fatal) दुर्घटना ट्रक से होती है। मोतिहारी नगर के लिए एक उपर्युक्त ट्रक ठहराव की अत्यन्त आवश्यकता है, जिसे ट्रांसपोर्ट नगर कहा जाता है।

नगरों की बाह्य समस्यायें – अध्ययन क्षेत्र में नगरों में ऐसी समस्यायें भी उत्पन्न ले रही हैं, जिनका जन्म नगर से बाहर होता है, परन्तु नगरीय जीवन को प्रभावित करती है। जैसे ग्रामीण क्षेत्रों से दैनिक यात्रियों का अत्यधिक नगर में प्रवेश, नगर सीमा के बाहर अनियंत्रित भूमि उपयोग, नगरों द्वारा कृषि भूमि का ऊँचे मूल्य पर अपहरण, मगर विस्तार से छोरीय ग्रामीण बस्तियों की अनदेखी और सेवा क्षेत्र के विकास के लिए नगर आधारित विकास योजनाओं का अभाव आदि।

मोतिहारी नगर में विभिन्न उद्देश्यों से ग्रामीण क्षेत्रों से एक बड़ी जनसंख्या आती है जो नगरीय सेवाओं का उपयोग तो करती है, परन्तु किसी प्रकार का कर नहीं देती है। साथ ही ऐसी जनसंख्या नगरवासियों के लिए विविध प्रकार की समस्यायें उत्पन्न करती है। मोतिहारी में दैनिक यात्रियों (commenters) की बड़ी संख्या मिलती है।

पूर्वी चम्पारण जिले के नगर केन्द्रों की सीमा के बाहर अनियंत्रित उपान्तीय विस्तार भी नगरीय समस्या को जन्म देता है। ऐसा विस्तार जब नगर सीमा की वृद्धि के परिणामस्वरूप नगर का अंग बन जाते हैं तो उनकी अनियोजित रचनायें, गमनागमन, जल निकासी, कूड़ा निष्पादन आदि के लिए अवरोध बन जाती है। ऐसे क्षेत्रों में स्थित ग्रामीण बस्तियाँ मोतिहारी, रक्सौल, पकड़ीदयाल आदिनगर केन्द्रों में अनेक समस्याओं को जन्म देती है।

पूर्वी चम्पारण जिले के नगर केन्द्रों के विस्तार के साथ जहाँ एक ओर कृषि भूमि पर अतिक्रमण होता है वहीं अनुपयुक्त भूमि पर निर्माण के कारण नगरीय जीवन प्रभावित होता है। कृषि भूमि पर अतिक्रमण के कारण कृषि उत्पादों की नगर में आपूर्ति घटने लगी है और दूर से मंगाई गई सामग्री के लिए नगरवासियों को अधिक मूल्य चुकाना पड़ता है। यह भी ध्यातव्यहै कि नगरों के अतिक्रमण से नगरों के बाहर फैली प्राकृतिक वनस्पति का आवरण समाप्त प्राय हो चला है, जबकि पर्यावरणीय संतुलन के लिए हरित पेटी की उपस्थिति आवश्यक है ताकि वायु प्रदूषण के कुप्रभावों को कम किया जा सके।

नगरों के सेवा क्षेत्रों का नगरों की नगरीय गतिविधियों से गहरा सम्बन्ध है। सामान्यतः नगर प्रशासन की प्रबन्धकीय व्यवस्था नगरीय सीमा पर समाप्त हो जाती है, फलतः सेवा क्षेत्र के विकास के लिए नगर आधारित प्रयास न होने के कारण नगरों और उनके सेवा क्षेत्रों के बीच होनेवाली अन्योन्य क्रिया बाधित होती है, जैसे कृषि उत्पादों का परिवहन ठीक समय से न होने के कारण जहाँ एक ओर

नगरवासियों को कष्ट झेलना पड़ता है, वहीं किसानों को सड़ने वाली सामग्री के लिए घाटा उठाना पड़ता है। स्पष्ट है कि सुगम्यता के अभाव में दोनों का लाभ बाधित होता है। पूर्वी चम्पारण जिले के नगर केन्द्र अपने सेवा क्षेत्र से सड़क से जुड़े हुए हैं। प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत ढलाई (कन्क्रीट सड़क) का निर्माण हुआ है, परन्तु सड़कें अच्छी स्थिति में नहीं है। इसलिए शीघ्र से नगर तक पहुँचने या ग्रामीण क्षेत्र में कठिनाई होती है। वर्तमान समय में इन्हीं समस्याओं के समाधान के लिए नगर के सेवा क्षेत्र की विकास–योजना नगर विकास के साथ किया जा रहा है।

संदर्भ–सूची :

1. Shindman, B., An Optimum Size for Cities, Readings in Urban Geography, Op. Cit., pp. 257-60.
2. Smailes, R.E., Indian City Structures, Urban Geography in Developing Countries, Op. Cit., pp. 50-59.